श्रीगुरूचरणकमलेभ्यो नमः ।

वैष्णव व्रतोत्सव पत्रिका 2024-2025

भागवत धर्म समाज
श्री श्री राधागोविन्द मन्दिर, बुर्जारोड, रमणरेती, वृन्दावन, मथुरा 281121
www.krsna.org

ज्योतिष की गणनानुसार प्रायः मासिक तिथियों में घटाबढी होती रहती है जिससे तिथियाँ एक दूसरे से मिलजाती हैं इस कारण उपवासों में विद्धा का संक्रमण हो जाता है । विद्धा तिथि में उपवास करने से सही परिणाम नहीं मिलता । इस समस्या से बचने के लिये इस पत्रिका को बनाते समय काशी विश्वविद्यालय से प्रकाशित काशीविश्वपञ्चांग का तथा व्यास महर्षि प्रणीत अर्वाचीन पुराणों (हरिभक्तिविलास सहित) को आधार बनाकर उपवास की तिथियों को निर्णीत करके इस पत्रिका में संकलित किया गया हैं । अर्थात् वैष्णव सिद्धान्तानुसार व्रत–उपवास करने की तिथियाँ इस पत्रिका में निर्धारित की गई हैं । इस पत्रिका की तिथियों को मानकर उपवास करने से भगवदानुरागी भक्तों को उनके उपवास करने की तपस्या का पूरा फल अवश्य प्राप्त होगा ।

वर्ष 2024

अप्रैल	09	मंगल	उगादि, नया सम्वत्, इस वर्ष का नाम कालयुक्त है और इस वर्ष का राजा मंगल है ।
अप्रैल	17	बुध	श्रीराम नवमी व्रत, एकादशी की तरह से ही इस व्रत का उपवास करना होगा तथा दूसरे दिन सुवह इस व्रत का पारण होगा ।
अप्रैल	19	शुक्र	कामदा एकादशी व्रत, दूसरे दिन सुवह व्रत का पारण ।
अपैल	23	मंगल	पूर्णिमा
मई	04	शनि	वरूथिनी एकादशी व्रत, दूसरे दिन सुवह पारण ।
मई	08	बुध	अमावस्या
मई	10	शुक्र	अक्षयतृतीया, वृन्दाबनस्थ लालपत्थर मन्दिर में भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी के श्रीविग्रह की अष्टोत्तरशत कलशों से एवं अनेकानेक औषधियों के साथ पञ्चामृत से महाभिषेक तत्पश्चात् भगवान श्रीगोविन्दजी के श्रीविग्रह का मलयागिरि चन्दन से श्रृगार ।
मई	19	रवि	मोहिनी एकादशी व्रत, दूसरे दिन सुवह पारण ।
मई	22	बुध	नृसिंहचतुर्दशी व्रत, एकादशी की तरह से ही इस व्रत का पालन तथा दूसरे दिन पारण । आगम शास्त्र में कहा गया है कि, वैष्णवैर्न तु कर्तव्या स्मरविद्धा चतुर्दशी, इस संस्कृत वाक्य का अर्थ यह है कि वैष्णवों को कभी भी त्रयोदशी से मिली हुई चतुर्दशी का उपवास नहीं करना चाहिये । जिस चतुर्दशी के सुवह में सूर्य का उदय हो उसी चतुर्दशी के दिन उपवास रहना चाहिये । यही शास्त्र सम्मत व्रत करने का तरीका है ।
मई	23	गुरु	वैसाखी पूर्णिमा ।
जून	02	रवि	अपरा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण ।

जून	06	गुरु	अमावस्या ।
जून	16	रवि	गंगा दशहरा । गंगाजी का जन्म दिन । इसदिन गंगाजी पृथ्वी पर आईं थीं ।
जून	18	मंगल	भीमसेनी निर्जला एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण ।
जून	22	शनि	पूर्णिमा ।
जुलाई	02	मंगल	योगिनी एकादशी व्रत, दूसरे दिन सुबह पारण ।
जुलाई	05	शुक्र	अमावस्या
जुलाई	07	रवि	भगवान जगन्नाथजी की रथयात्रा, पुरी । हमारे श्रीस्वामीजी का प्रकट दिन । इसदिन सभी शिष्य मिलकर महामण्डलेश्वर महन्त श्रीकृष्ण बलराम स्वामी की व्यासपूजा करते हैं ।
जुलाई	17	बुध	हरिशयनी (देवशयनी या पद्मा) एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण । इसदिन से चातुर्मास्या आरम्भ होता है । आजसे अगले एक महिने तक सभी प्रकार की पत्तियोंवाली सब्जियों का त्याग करना आवश्यक है ।
जुलाई	21	रवि	गुरूपूर्णिमा, श्रीपाद सनातन गोस्वामी का उत्सव ।
जुलाई	31	बुध	कामिका एकादशी व्रत, दूसरे दिन व्रत का पारण ।
अगस्त	04	रवि	अमावस्या ।
अगस्त	16	शुक्र	पुत्रदा एकादशी व्रत, भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी का (पूर्णिमा तक) झूलनयात्रा शुरू तथा पत्तोंवाली सब्जियों को खाना शुरू । आज से दही–छाछ का अगले तीस दिन तक त्याग करना होगा । दूसरे दिन एकादशी के व्रत का पारण ।
अगस्त	19	सोम	पूर्णिमा, भगवान की झूलनयात्रा समाप्त, भद्रा के कारण रक्षाबन्धन का उत्सव दोपहर 13.15 के बाद ही मनाया जायेगा । इसदिन श्रीचैतन्य महाप्रभूजी का वृन्दावन आगमन हुआ था ।
अगस्त	27	मंगल	श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत, भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी का रात 11.30 बजे अभिषेक और फिर पूरी आरती । दूसरे दिन सुबह व्रत का पारण । श्रील् प्रभुपादजी के शिष्यों को केवल एक चावल खाकर ही व्रत को तोडना होगा ।
अगस्त	28	बुध	नन्दोत्सव, श्रील् प्रभूपादजी का प्रकट दिन, श्रील् प्रभुपादजी के शिष्यों का आधा दिन उपवास और फिर उत्सव ।
अगस्त	30	शुक्र	अजा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण ।
सितम्बर	03	मंगल	अमावस्या ।
सितम्बर	07	शनि	गणेश चतुर्थी, चन्द्रदर्शन निसिद्धम्, इसदिन रात को चन्द्रमा की ओर नहीं देखना चाहिये ।
सितम्बर	11	बुध	राधाष्टमी, इसदिन आधेदिन तक व्रत रहकर हलुआ, पूडी, सब्जी का भोग लगाकर उत्सव

मनाना चाहिये ।

सितम्बर 14	शनि	परिवर्तिनी एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण, दही छाछ खाना शुरू । अगले तीसदिन तक दूध और दूध से बनी वस्तुओं का त्याग करना होगा । लेकिन पनीर (छेना) या छेना से बनी वस्तुयें स्वीकार की जा सकती हैं ।
सितम्बर 18	बुध	पूर्णिमा । इसदिन चन्द्रमा में सुबह 7.42 से 8.47 तक ग्रहण लगेगा इसलिये वह भारत में दिखाई नहीं देगा । अतः भारत में किसी प्रकार का सूतक नहीं लगेगा । यह ग्रहण यूरोप, आमेरिका और कनाडा आदि देशों में दिखाई देगा और वहाँ ग्रहण के सूतक का प्रभाव पडेगा ।
सितम्बर 28	शनि	इन्दिरा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण ।
अक्टूबर 02	बुध	अमावस्या ।
अक्टूबर 12	शनि	विजयादशमी, दशहरा, भगवान श्रीराजी का रावण पर विजय । श्रीपाद मध्वाचार्य जयन्ती ।
अक्टूबर 14	सोम	पापांकुशा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण । इसदिन से दूध पीना शुरू लेकिन अगले तीस दिन तक सभी प्रकार की दालें खाना, लौकी, बैंगन, काशीफल, काजू, बादाम, पिस्ता आदि द्विदल वस्तुओं का त्याग करना होगा । इसदिन से कार्तिक नियम सेवा का आरम्भ । प्रतिदिन आकाश दीपदान एवं दामोदराष्टक तथा ब्रजराजसुताष्टक का बाद्यों के साथ शाम को पाठ ।
अक्टूबर 17	गुरु	शारदीय पूर्णिमा, भगवान श्रीकृष्ण इसदिन गोपिकाओं के साथ रासलीला किये थे । इसदिन चन्द्रमा के साक्षी होने के कारण भगवान का खीरभोग चन्द्रोदय के सामने लगता है ।
अक्टूबर 24	गुरु	अर्धरात्रि में राधाकुण्ड स्नान ।
अक्टूबर 28	सोम	रमा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण ।
नवम्बर 01	शुक्र	दीपावली, दीप आराधना के पश्चात् लक्ष्मी पूजन । स्कन्द पुराण में लिखा है कि, भूतविद्धा तु अमावस्या न ग्रह्या मुनि पुंगवैः, अर्थात् सभी ऋषि मुनियों कहा है कि चतुर्दशी से मिली हुई अमावस्या का किसी भी तरह से पालन नहीं करना चाहिये । जिस अमावस्या की तिथि में सूर्य का उदय हो उसी अमावस्या को स्वीकार करना चाहिये । यही शास्त्र सम्मत निर्णय है ।
नवम्बर 02	शनि	अन्नकूट ।
नवम्बर 05	मंगल	कार्तिक शुक्ल चतुर्थी, श्रील प्रभूपादजी का तिरोभाव दिन । इसदिन श्रील प्रभूपादजी के शिष्यों का आधा दिन उपवास तथा श्रील प्रभूपादजी के शिष्यों द्वारा भजन कीर्तन के साथ उत्सव ।
नवम्बर 10	रवि	अक्षय नवमी, मथुरा–वृन्दाबन परिक्रमा ।
नवम्बर 11	सोम	इसदिन से भीष्म पञ्चक आरम्भ हो जाता है ।
नवम्बर 12	मंगल	हरिबोधिनी एकादशी व्रत । इसदिन शाम को गन्ने के टुकडे पर रखकर भगवान को दीपदान किया जाता है । दूसरे दिन शुबह एकादशी व्रत का पारण ।
नवम्बर 15	शुक्र	पूर्णिमा, देवदीपावली । इसदिन देवता लोग भगवान श्रीराम के अयोध्या पधारने पर उनके

स्वागत के लिये दिवाली मनाते हैं। देवताओं के दिनों की गिनती में हमारे गिनती से पन्द्रह दिनों का फरक होता है इसलिये हमारी और देवताओं की दिवाली अलग–अलग मनती है। भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभूजी वृन्दाबन आये थे। दूसरे दिन कार्तिक नियम–सेवा का समापन।

नवम्बर 26 मङ्गल उत्पन्ना एकादशी व्रत, दूसरे दिन व्रत का पारण।

दिसम्बर 01 रवि अमावस्या।

दिसम्बर 11 बुध मोक्षदा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण, अगले तीस दिन तक खिचडी का भोग आरम्भ।

दिसम्बर 15 रवि पूर्णिमा।

दिसम्बर 26 गुरु सफला एकादशी व्रत, दूसरे दिन सुवह पारण।

दिसम्बर 30 सोम अमावस्या।

वर्ष 2025
=======

जनवरी 10 शुक्र पुत्रदा कादशी व्रत, दूसरे दिन व्रत का पारण, खिचडी भोग समाप्त।

जनवरी 13 सोम पूर्णिमा, अगले तीस दिन तक बेर और मूली का त्याग।

जनवरी 25 शनि षट्तिला एकादशी व्रत, दूसरे दिन व्रत का पारण।

जनवरी 29 बुध अमावस्या।

फरवरी 03 सोम वसन्त पञ्चमी, सरस्वती जन्म दिन। आन्ध प्रदेश में श्री श्री राधागोविन्दजी का पाटोत्सव।

फरवरी 08 शनि जया एकादशी व्रत, दूसरे दिन व्रत का पारण।

फरवरी 10 सोम नित्यानन्द त्रयोदशी, इसदिन भक्त लोग उत्सव मनाते हैं।

फरवरी 12 बुध पूर्णिमा।

फरवरी 24 सोम विजया एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण।

फरवरी 27 गुरु शिवचतुर्दशी व्रत, एकादशी की तरह से ही इस व्रतका प्रसाद ग्रहण। इसदिन दूध पीना तथा दूध से बने पदार्थों को ग्रहण करना मना है। दूसरे दिन इस व्रत का पारण।

फरवरी 28 शुक्र अमावस्या।

मार्च 05 बुध इसदिन भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी अपने श्रीविग्ररूप से लालपत्थर मन्दिर वृन्दावन में प्रकट हुए थे इसलिये शोभायात्रा के साथ भगवान का उत्सव मनाया जाता है।

मार्च	10	सोम	आमलकी एकादशी व्रत, इसदिन से पूर्णिमा तक श्रीश्रीराधागोविन्दजी का रंगोत्सव होगा । दूसरे दिन शुबह एकादशी व्रत का पारण ।
मार्च	13	गुरु	होली । इसदिन भद्रा होने के कारण होलिका का दहन रात्री 10.35 के बाद होगा ।
मार्च	14	शुक्र	गौर पूर्णिमा, भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभूजी का आविर्भाव दिन, एकादशी की तरह का व्रत करना चाहिये, मन्दिर में शाम को चन्द्रोदय के पश्चात् भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभुजी का अभिषेक । दूसरे दिन इस व्रत का पारण होगा । होली । इसदिन भगवान का रङ्गोत्सव समाप्त होगा । इसदिन शुबह 10.40 से 14.18 शाम तक शन्द्रमा में ग्रहण लगेगा जो भारत में दिखाई नहीं देगा । इसलिये भारत में किसी प्रकार का सूतक नहीं लगेगा । यह ग्रहण अमरीकी देशों में, कनाडा और यूरोप में दिखाई देगा ।
मार्च	25	मङ्गल	पापमोचिनी एकादशी व्रत, दूसरे दिन सुबह व्रत का पारण ।
मार्च	29	शनि	अमावस्या । इसदिन सूर्य ग्रहण होगा किन्तु यह भारत में दिखाई नहीं देगा । इसलिये इसदिन कोई सूतक का नियम लागू नहीं होगा ।

इति